Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

डी.एल.एड. पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष अन्तर्गत कार्यानुभव शिक्षण के व्यावहारिक स्वरूप का अध्ययन

डॉ. रश्मि शर्मा* पवन कुमार सोपरा**

* प्राचार्य, राष्ट्र भारती शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र) सतत् शिक्षा अध्ययनशाला, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – 'मैंने साक्षर होने की सराहना कभी नहीं की, मेरे अनुभवों ने साबित किया है कि केवल साक्षर होना किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का संवर्धन नहीं कर सकता। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि शिक्षा के साथ कार्य को जोड़ा जाए। मेरे विचार से प्रारंभ से ही बच्चों को श्रम की गरिमा से परिचित कराया जाए।'– महात्मा गाँधी

किसी भी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में व्यावहारिक (Practical) अनुभव आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य है। कहा जाता है, 'Learning by doing' अर्थात् कार्य करने के दौरान हुए अनुभव, स्मृति का अटूट हिस्सा बनकर अधिगम में परिणित हो जाते हैं। इस प्रकार से किया गया अधिगम अधिक आत्मविश्वास लेकर आता है तथा वह समाजोपयोगी और स्थायी होता है।

भारत की शिक्षक शिक्षा में 'बुनियादी शिक्षा' के रूप में कार्य से शिक्षा का अभिनव मॉडल विकसित हुआ है। समय के साथ–साथ गतिविधियों के स्वरूप में पर्याप्त बदलाव आया, किन्तु सैद्धान्तिक गतिविधियों के साथ–साथ व्यावहारिक गतिविधियों का आज भी उतना ही महत्व है। हालांकि इन अनेक व्यावहारिक गतिविधियों का सीमित संसाधनों के साथ समुचित सम्पादन कैसे हो यह एक चुनौती है और शिक्षक से जुड़े अधिकांश हितग्राही इसे महसूस भी करते हैं। प्रस्तुत शोध में इस दिशा में एक अभिनव प्रयास किया है।

प्रस्तावना – शिक्षा का मूल लक्ष्य है **'बच्चों का संर्वांगीण विकास करना'**। शिक्षा देने का दायित्व शिक्षक का है और समय परिवर्तन के साथ शिक्षकों की भूमिका में भी बदलाव हो रहा है। तथ्यों से परिचित कराना, ज्ञान देना ही शिक्षक का दायित्व नहीं है अपितु ज्ञान प्रदान करने वाले अनेक विकल्प आज शिक्षकों व बच्चों के सामने है। शिक्षक को एक सुविधादाता, मार्गदर्शक की भांति माना जा रहा है। जो बच्चों की दशा को जानते हुए सही दिशा में उनका मार्ग प्रशस्त करें। बच्चों की व्यक्तिगत भिन्नता को पहचानते हुए अधिगम के आनन्ददायी वातावरण और इस वातावरण में उनका व्यक्तिगत, नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास स्वाभाविक रूप से हो सके। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जिसके लिये कोई एक शिक्षण तकनीक नहीं हो सकती है और इसलिये शिक्षण कार्य के लिये सतत् आत्मचिंतन, आत्मप्रेरणा तथा सृजनशील शिक्षक बनने की तैयारी की आवश्यकता है।

NCF–2005 एवं NCFTE–2009 द्वारा तैयार मापदण्डों के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा के अन्तर्गत डी.एल.एड. पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। जिससे शिक्षकों में शिक्षकीय पेशे के लिये व्यावसायिक दक्षता विकसित की जा सके। शिक्षकों के लिये शिक्षण प्रक्रिया में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक कार्यानुभवों का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रारंभिक शिक्षा द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में व्यावहारिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कम्प्यूटर शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, कला और शिक्षा, तथा कार्य और शिक्षा को सम्मिलित किया गया है।

डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में कार्यानुभव शिक्षा को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से शोध किया गया। संस्थान स्तर पर व्यवस्थित योजना अनुसार कार्य और शिक्षा अन्तर्गत बागवानी कार्य, स्वच्छता संबंधी कार्य, शाला परिसर की सजावट, फर्नीचर का रखरखाव, शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया गया। कला और शिक्षा अन्तर्गत गुरूवारीय कार्यक्रम के साथ साहित्यिक गतिविधियां, पेपर वर्क, TLM निर्माण, संगीत प्रतियोगिता, नाटक मंचन आदि कार्य किये गये। शारीरिक शिक्षा व भावनात्मक विकास अन्तर्गत योग–प्राणायाम, व खेलकूद गतिविधियां आयोजित की गई। RCBC (ई दक्ष केन्द्र) के सहयोग से छात्राध्यापकों को कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान की गई। रेटिंग स्केल एवं उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से पूर्व व पश्च परीक्षण लेकर परिणाम व निष्कर्ष निकाले गये।

शोध समस्या का कथन : डी.एल.एड. पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष अन्तर्गत कार्यानुभव शिक्षण (व्यावहारिक पाठ्यक्रम) के व्यावहारिक स्वरूप का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य : प्रस्तुत लघु अवधि शोध अध्ययन का उद्देश्य डाइट के डी.एल.एड. प्रथम वर्ष के नियमित छात्राध्यापकों को कार्यानुभव शिक्षा का व्यावहारिक ज्ञान कराना है ताकि वे अपने शिक्षकीय जीवन में कार्य शिक्षा, कला शिक्षा, शारीरिक व स्वास्थ्य शिक्षा व कम्प्यूटर शिक्षा की गतिविधियों का प्रभावी व्यावहारिक उपयोग कर सके।

परिकल्पना :

1. शारीरिक शिक्षा के अंतर्गत खेल, योगासन व व्यायाम का अभ्यास नियमित रूप से कराते हुए छात्राध्यापकों में शारीरिक शिक्षा के साथ सकारात्मक भावनाओं का विकास हो सकेगा।

2. बागवानी एवं सजावटी वस्तुओं के निर्माण कार्य द्वारा छात्राध्यापक कार्य एवं शिक्षा के कौशलों से परिचित हो सकेंगे।
3. चित्रकला एवं ललित कला के नियमित अभ्यास द्वारा छात्राध्यापकों में सृजनात्मकता में वृद्धि हो सकेगी।
4. छात्राध्यापक शिक्षण की पद्धतियों में नवीन तकनीक का उपयोग करते हुए पाठों को रूचिकर, बोधगम्य एवं कौशलात्मक बना सकेगें।

शोध प्रविधि :

उपकरण का विवरण : शोध समस्या के अध्ययन के लिये एक अवधारणा आधारित प्रश्नावली उपकरण के रूप में प्रयोजन में लाई गई। प्रश्नावली में निम्न अवधारणाओं पर आधारित प्रश्न इस प्रकार लिये गये–

- कार्य और शिक्षा पर आधारित – 10 प्रश्न
- कला और शिक्षा पर आधारित – 10 प्रश्न
- शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य पर आधारित– 10 प्रश्न
- कम्प्यूटर शिक्षा पर आधारित – 10 प्रश्न

न्यादर्श छात्राध्यापकों को प्रत्येक उपलब्धि परीक्षण अवधारणा पर आधारित 10 प्रश्नों का परीक्षण दिया गया एवं प्राप्तांकों का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले गए।

समष्टि का विवरण : डाइट मन्दसौर में D.EL.Ed. अध्ययनरत समस्त छात्राध्यापक।

न्यादर्श : डाइट, मन्दसौर में डी.एल.एड. प्रथम वर्ष में अध्ययनरत 78 छात्राध्यापकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया।

प्रदत्तों का संकलन और उनका विश्लेषण : न्यादर्श छात्राध्यापकों का कार्यानुभव के चार क्षेत्रों में प्रश्नावली आधारित पूर्व व पश्च परीक्षण किया। प्राप्त प्रदत्तों का सांख्यकीय व रूब्रिक आधारित विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले गये।

मुख्य सम्प्राप्तियाँ एवं निष्कर्ष : प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में डाइट मन्दसौर में अध्ययनरत, डी.एल.एड. प्रथम वर्ष के न्यादर्श छात्राध्यापकों का कार्यानुभव शिक्षा के चार क्षेत्रों स्वास्थ्य व शारीरिक शिक्षा, कार्य और शिक्षा, कला और शिक्षा तथा कम्प्यूटर शिक्षा में प्रश्नावली आधारित पूर्व व पश्च परीक्षण लिया गया। पूर्व परीक्षण में प्राप्त विचारों, जिज्ञासाओं के आधार पर डाइट फेकल्टी व शोधकर्ता द्वारा योजनाबद्ध गतिविधियाँ की गई। गतिविधियों उपरान्त पुन: उक्त चारों क्षेत्रों में प्रश्नावली आधारित पश्च परीक्षण लिया गया। पूर्व व पश्च परीक्षण के प्रदत्तों का विश्लेषण करने पर निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

(अ) स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा :

1. डी.एल.एड. प्रशिक्षण के दौरान उनकी नियमित योग: प्राणायाम की जानकारियों में वृद्धि परिलक्षित हुई।
2. अधिकांश छात्राध्यापक विद्यालय व समुदाय में समग्र स्वच्छता के प्रति अपना उत्तारदायित्व समझते हैं एवं डाइट स्तर पर उनके द्वारा किया कार्य प्रमाण है।
3. डी.एल.एड. प्रशिक्षण के दौरान डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की औषधीय पौधों के उपयोग की जानकारी प्राप्त हुई।
4. अधिकांश छात्राध्यापक शारीरिक शिक्षा को कौशल विकास के रूप में देखते हैं एवं शारीरिक शिक्षा संबंधी गतिविधियां उनके शिक्षकीय जीवन में उपयोगी है। उस अवधारणा के प्रति सकारात्मक परिवर्तन देखा गया ।
5. न्यादर्श के अधिकांश छात्राध्यापक मानते हैं कि योगासन और व्यायाम अपनाकर अच्छे स्वास्थ्य व रहन–सहन के प्रति जागरूक हुआ जा सकता है, इसे उत्ताम बना सकते हैं। व्यायाम के माध्यम से शिक्षा में एकाग्रता उत्पन्न होती है। इस धारणा में सकारात्मक बदलाव पाया गया।
6. रूब्रिक विश्लेषण में पूर्व परीक्षण के स्कोर 66.58 प्रतिशत था जो पश्च परीक्षण में 83.58 प्रतिशत हो गया। तुलनात्मक 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

निष्कर्षत: कार्यानुभव शिक्षा अन्तर्गत स्वास्थ्य व शारीरिक शिक्षा की गतिविधियां एवं इनका शाला स्तर पर व्यवहारिक क्रियान्वयन बच्चों को उत्ताम स्वास्थ्य हेतु अच्छी आदतों, योग, प्राणायाम, खेल हेतु प्रेरित करेगा। शिक्षक बच्चों को परिवेशीय स्वच्छता और सहयोग की भावना हेतु प्रेरित कर सकेंगे।

(ब) कार्य और शिक्षा :

1. न्यादर्श के अधिकांश छात्राध्यापक मानते हैं कि डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में कार्य आधारित शिक्षा होना चाहिए।
2. अधिकांश छात्राध्यापक मानते हैं कि गीत व प्रार्थना से मानवीय मूल्यों का विकास संभव है, डाइट स्तर पर नियमित प्रार्थना सभा का आयोजन इसका प्रमाण है। इसका सकारात्मक प्रभाव इंटर्नशीप शाला में भी देखा गया।
3. कार्यशिक्षा, शैक्षिक गतिविधियों में ज्ञान, समझ व व्यवहारिक कौशलों को शामिल करने पर जोर देती है। इस अवधारणा में छात्राध्यापकों का सकारात्मक रूझान पाया गया।
4. अधिकांश छात्राध्यापक मानते हैं कि कार्य शिक्षा, शाला परिसर को स्वच्छ, सुन्दर बनाने में मदद करती है। कार्यशिक्षा को कौशल विकास के रूप में देखते है एवं मानते है कि उससे नेतृत्व विकास का गुण विकसित होता है।
5. इश्शरीळिसि लू वळिसि (करके सीखना) हेतु कार्य शिक्षा शारीरिक श्रम करने हेतु प्रेरित करती है, रचनात्मक कार्यों, सजावटी वस्तु निर्माण में छात्राध्यापकों की रूचि विकसित करती हैं।
6. बागवानी के कार्यों में छात्राध्यापकों की व्यवहारिक सहभागिता रहीं। अधिकांश छात्राध्यापक मानते हैं कि कार्य शिक्षा अन्तर्गत प्रार्थना, बागवानी, रचनात्मक कार्य संबंधित गतिविधियाँ एवं प्रशिक्षण उनके शिक्षकीय जीवन में उपयोगी हैं।
7. रूब्रिक विश्लेषण में पूर्व परीक्षण का स्कोर 66.56 था जो पश्च परीक्षण में 81.07 हो गया। तुलनात्मक रूप से 14.51 प्रतिशत वृद्धि हुई।

निष्कर्षत: कार्यानुभव शिक्षा अन्तर्गत कार्य व शिक्षा की गतिविधियां जैसे प्रार्थना, बागवानी, शाला परिसर की स्वच्छता, शारीरिक श्रम आधारित रचनात्मक गतिविधियां, उनके शिक्षकीय जीवन में उपयोगी है। वे इसे कौशल विकास व नेतृत्व के रूप में देखते हैं। इसके माध्यम से एक बेहतर शाला परिसर व मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण वातावरण का निर्माण किया जा सकता हैं।

(स) कला और शिक्षा :

1. न्यादर्श के अधिकांश छात्राध्यापक मानते हैं कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण के दौरान सृजनात्मक कार्यों एवं उनके व्यवहारिक क्रियान्वयन से उनके धैर्य व एकाग्रता में वृद्धि होती है।

2. अधिकांश छात्राध्यापक मानते हैं कि कार्यानुभव शिक्षा के प्रभाव से वे पहले से बेहतर तरीके से अपनी अभिव्यक्ति दे सकते हैं, उनके आत्मविश्वास व परिपक्वता में वृद्धि परिलक्षित हुई।
3. अधिकांश छात्राध्यापकों के मतानुसार प्रदर्शनकारी कलाएं, पेपरवर्क, अनुपयोगी वस्तुओं से सृजनात्मक निर्माण उनके कक्षा शिक्षण में प्रभावी है, उनके चित्र, पोस्टर, आदि बनाने की क्षमता में वृद्धि परिलक्षित हुई।
4. अधिकांश छात्राध्यापकों के मतानुसार कला शिक्षा संबंधी गतिविधियां उनके शिक्षकीय जीवन में उपयोगी है और वे इसे कौशल विकास के रूप में देखते हैं।
5. रूब्रिक विश्लेषण में पूर्व परीक्षण में स्कोर 64.71 था जो पश्च परीक्षण में 80.51 हो गया। तुलनात्मक रूप से 15.80 प्रतिशत वृद्धि हुई।

निष्कर्षत: कार्यानुभव शिक्षा अन्तर्गत कला व शिक्षा की गतिविधियां जैसे– प्रदर्शनकारी कलाएं, पेपरवर्क, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, अनुपयोगी वस्तुओं से सृजनात्मक निर्माण एवं इसका व्यवहारिक क्रियान्वयन छात्राध्यापकों के शिक्षकीय जीवन में उपयोगी है। वे इसे कौशल विकास के रूप में देखते हैं एवं मानते है कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण में कला और शिक्षा की गतिविधियों से उनके धैर्य व एकाग्रता में वृद्धि हो सकती है।

(द) कम्प्यूटर शिक्षा – न्यादर्श छात्राध्यापकों का प्रश्नावली आधारित उपलब्धि परीक्षण लिया गया। डाइट फेकल्टी द्वारा कम्प्यूटर शिक्षण, कम्प्यूटर लैब में प्रेक्टीकल अनुभव किया गया। तत्पश्चात् पश्च परीक्षण लिया गया। पूर्व व पश्च परीक्षण में तुलनात्मक 26 प्रतिशत की वृद्धि पाई गई।

स्पष्ट है कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण में कम्प्यूटर की उपयोगिता बढ़ी है। छात्राध्यापक सूचना व सम्प्रेषण तकनीकी के उपयोग द्वारा अपने शिक्षण में व्यावहारिक परिवर्तन ला सकते है। पॉवर पाइंट, इन्टरनेट के माध्यम से अपने शिक्षण को उत्ताम बना सकते हैं।

सारांशत: छात्राध्यापक कार्यानुभव शिक्षा के सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यवहारिक अनुभवों के आधार पर बच्चों का सर्वांगीण विकास करने में सहायक हो सकते है। डी.एल.एड. प्रशिक्षण के दौरान शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य, कार्य और शिक्षा, कला और शिक्षा, तथा कम्प्यूटर शिक्षा का व्यवहारिक अनुभव दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

सुझाव :

1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में कार्यानुभव शिक्षा का प्रशिक्षक अवश्य होना चाहिए।
2. शिक्षकों के कौशल विकास में कार्यानुभव शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक प्रशिक्षण संस्थान में बागवानी, स्वच्छता व शारीरिक श्रम की गतिविधियां अवश्य हो।
3. कला और शिक्षा अन्तर्गत प्रदर्शनकारी कलाएं, अनुपयोगी वस्तुओं से सृजनात्मक निर्माण, पेपरवर्क, क्लेवर्क आदि को प्रशिक्षण का व्यवहारिक हिस्सा बनाया जाना चाहिए।
4. कम्प्यूटर शिक्षा अन्तर्गत इन्टरनेट, पावर पाइंट प्रेजेन्टेशन का उपयोग कक्षा शिक्षण में अवश्य हो।
5. खेलकूद, व्यायाम व शारीरिक शिक्षा के सैद्धांतिक व व्यावहारिक ज्ञान हेतु प्रशिक्षण संस्थाओं में एक झढख अवश्य होना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. डी.एल.एड. पाठ्यक्रम – राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल–2014
2. डॉ. प्रमोद कुमार सेठिया, व्याख्याता, डाइट मंदसौर, शोध पत्र।
3. दवे रमेश, 'मैं इस तरह नहीं पढ़ूंगी', 2004, ग्रन्थशिल्पी, नईदिल्ली।
4. किशोर मुकेश, 'मुझे ऐसे पढ़ाओ', 2010, राजकमल प्रकाशन, पटना।
5. शर्मा प्रेमपाल, 'पढ़ने का आनन्द', 2011, सामयिक बुक्स, नईदिल्ली।
6. भारती रेशमा, 'स्कूल पास या फेल', 2006, सोशल चेंज पेपर्स, नईदिल्ली।
7. सुखोम्लीन्स्की वसीली, 'खुशियों का स्कूल', 2006, अरूण प्रकाश, दिल्ली।
8. जांगीरा एन.के., 'प्रभावशाली शिक्षण', 2001, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नईदिल्ली।
8. जांगीरा एन.के., 'संवेदनशील शिक्षण', 2007, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा।
9. होल्ट जॉन, 'शिक्षा के बजाय', 2007, एकलव्य।
10. जैन रमेश कुमार, 'विज्ञान और समाजोपयोगी उत्पादक कार्य', 2011, शिल्पी प्रकाशन, जयपुर।
11. ब्रह्मवर्चस, 'बाल संस्कार शाला', 2007, शांतिकुंज, हरिद्वार।
12. अहलावत हरिसिंह, 'सचित्र खेल नियम', 2011, बी.आर. पब्लिशर्स, जयपुर।
13. गुप्ता रामचरणलाल, 'समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाजसेवा', 2007, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर।
14. कश्यप महेन्द्र, 'शारीरिक शिक्षा एवं खेल नियम', 2011, सुरभि पब्लिकेशन, जयपुर।
15. जैन प्रदीप कुमार, 'शिक्षा और पाठ्यसहगामी क्रियाएँ', 2005, उत्ताम प्रकाशन दिल्ली ।
16. स्वामी रामदेव, 'योग साधना व योग चिकित्सा रहस्य', 2002, दिव्य प्रकाशन हरिद्वार।
17. 'कला स्कूल शिक्षा में' 'लर्निंग कर्व' अंक 6, दिसम्बर, 2003, अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय।
18. 'उत्पादक कार्य और शिक्षण शास्त्र' लर्निंग कर्व, हिन्दी अंक 12, मई, 2016 अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय।

****